2 मार्च 2017, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन

पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 39, अंक : 23 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

मार्च (प्रथम), 2017 (वीर नि. संवत्-2543) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में -

पंचम वार्षिकोत्सव का भव्य उद्घाटन

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में दिनांक 26 से 28 फरवरी, 2017 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के पंचम वार्षिकोत्सव का उद्घाटन सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर दिनांक 26 फरवरी को प्रातः डॉ. भारिल्ल द्वारा रचित श्री प्रवचनसार महामंडल विधान के उपरान्त उद्घाटन सभा को अत्यन्त संक्षेप में पूर्ण कर **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** द्वारा प्रवचनसार के ज्ञानतत्त्वप्रज्ञापन अधिकार पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला। वार्षिकोत्सव का प्रारम्भ श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन परिवार जयपुर द्वारा ध्वजारोहण करके किया गया। सभी अतिथियों का सम्मान ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलजी गोदिका, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया। प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री नितिनभाई सी. शाह मुम्बई एवं प्रवचन मंच का उद्घाटन श्री सुरेशचंदजी जैन परिवार बैंगलोर, समारोह का उद्घाटन श्री नरेशकुमारजी लुहाड़िया दिल्ली द्वारा किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री संजयजी जैन कोठारी मुम्बई ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री कांतिभाई मोटानी मुम्बई मंचासीन थे। टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका के अतिरिक्त विद्वत्वर्ग में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल मंचासीन थे।

मंगलाचरण पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर एवं मंच संचालन ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

इस वार्षिकोत्सव के अन्तर्गत श्री प्रवचनसार महामंडल विधान का आयोजन किया जा रहा है, जिसके आमंत्रणकर्त्ता श्री इन्दरचंदजी-सरोज कटारिया जयपुर, श्री सुरेशचंदजी अजीतजी वैभवजी तोतुका जयपुर, श्रीमती कविता प्रकाशचंदजी छाबड़ा सूरत एवं लक्ष्मीचंदजी जैन सीकर वाले जयपुर हैं।

वार्षिकोत्सव सानन्द संपन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट नागपुर द्वारा संचालित श्री महावीर विद्या निकेतन का नवम् वार्षिकोत्सव दिनांक 15 से 19 फरवरी तक मनाया गया।

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रातः पंचपरावर्तन एवं रात्रि में तीन लोक विषय पर व्याख्यानों का लाभ मिला।

कार्यक्रम का शुभारंभ पण्डित नितिनजी शास्त्री झालरापाटन द्वारा स्वागत गीत से हुआ तथा मंगलाचरण कक्षा 8 के छात्रों द्वारा किया गया।

इस अवसर पर कक्षा 10 के छात्रों ने अपने खट्टे-मीठे अनुभव सुनाये तथा प्रमुख अतिथियों ने भी अपने-अपने वक्तव्य से जनसमूह का मार्गदर्शन किया। तत्पश्चात् श्री महावीर विद्या निकेतन के टॉप 10, टॉप 5, टॉप 3 विद्यार्थियों के नामों की घोषणा के साथ आदर्श विद्यार्थी के रूप में संस्कार राजकुमार जैन घुवारा का चयन किया गया तथा पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम में कक्षा 9 के छात्रों द्वारा विद्या निकेतन की दिनचर्या को नाटिका के माध्यम से प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम का संचालन उपप्राचार्य पण्डित मनीषजी शास्त्री एवं अधीक्षक पण्डित भूषणजी शास्त्री ने किया।

निःशुल्क निःशुल्क निःशुल्क

डाकटिकट भेजकर निःशुल्क साहित्य मंगा लेवें

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित श्री प्रवचनसार महामंडल विधान पृष्ठ 96 स्वाध्यायार्थ भेंट दिया जा रहा है। यह कृति **मोटानी परिवार, मुम्बई** की ओर से निःशुल्क उपलब्ध है।

इच्छुक महानुभाव 2/- रु. का डाकटिकट निम्न पते पर भेजकर उक्त ग्रंथ मंगा सकते हैं।

पता -निःशुल्क साहित्य वितरण विभाग-प्रकाशन मंत्री, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापू नगर, जयपुर-302015 (राज.)

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

किसी को सिर का शूल तो किसी को कानों का कष्ट, किसी को दमा से बेचैनी तो किसी को पेट की भयंकर पीड़ा, किसी को दिन-रात खांसी से चैन नहीं तो कोई हृदय की घबड़ाहट से बेचैन। जहाँ देखो वहीं दर्द ही दर्द। यदि कोई बेदर्द थे तो केवल डॉक्टर, नर्सें और कम्पाउंडर, जिन्हें न किसी के दर्द की परवाह और न किसी के चिल्लाने की चिन्ता। वे भी बेचारे क्या करें ? कराहें सुनते-सुनते उनके भी कान बठर हो गये थे। बड़ी से बड़ी चीख अब उन्हें प्रभावित नहीं करती थी।

वे दर्द दबाने की भी आखिर कितनी दवाएँ दें ? दवाओं की भी तो अपनी सीमाएँ होती हैं ? अत: दवाओं से तो केवल असहनीय दर्द को ही दबाया जा सकता है। थोड़ा-बहुत दर्द तो मरीज को सहना ही पड़ता है।

उन्होंने जो यह मान रखा था कि 'मरीजों की तो आदत ही चीखने-चिल्लाने की होती है'। कुछ अंश तक तो उनकी इस सोच को सच कहा भी जा सकता है; पर इससे बेचारे वे मरीज तो बेमौत मारे ही जाते हैं, जिनको वस्तुत: असह्य दर्द होता है। परन्तु यह पहचान भी कोई कैसे करे कि किसको कितना कष्ट है ? कष्ट मापने का थर्मामीटर तो किसी के पास है नहीं।

बस, इन्हीं सब बातों से घबड़ाकर अज्जू ने अन्नू से परामर्श करके यह निश्चय किया कि अस्पताल से छुट्टी पाने के लिये विज्ञान से निवेदन किया जाये। वे इस संबंध में भी हमारी सहायता कर सकते हैं।

एक दिन डरते-डरते अज्जू ने विज्ञान से बड़े ही विनम्र शब्दों में कहा –''हम आपका जितना भी उपकार माने थोड़ा है। आप हम जैसे तुच्छ लोगों के साथ भी कितना कष्ट उठा रहे हैं और कितना रुपया हम लोगों पर खर्च कर रहे हैं। हम अनेक जन्मों में भी आपके इस ऋण से उऋण नहीं हो पायेंगे। यदि हम प्रथम परिचय में ही आपकी सलाह मान लेते और संजू की बातों में नहीं आते तो हमें ये दुर्दिन देखने ही नहीं पड़ते। 'पर होनहार बलवान होती है।' उसी के अनुसार सब कारण कलाप मिलते हैं। इसीकारण आपकी बात उस समय हमारी समझ में नहीं आयी।

जाति से जैन होकर भी हमने कोई भी काम जैनधर्म के अनुकूल नहीं किया। हम कितने पापी हैं; पर हम करते भी क्या ? दुर्भाग्य से हमें जन्म से ऐसा वातावरण ही नहीं मिला, जिससे हमें धर्म-कर्म से परिचय प्राप्त करने का सौभाग्य मिलता, हम तो ऐसे वातावरण में रहे कि जहाँ हमें केवल भौतिक वातावरण ही मिला। अब आपकी सद्प्रेरणा से हमें कुछ धर्म को सुनने, समझने एवं तदनुसार उसे आचरण में लाने की रुचि हुई है।

अत: हम धर्म के विषय में कुछ विशेष जानना चाहते हैं और जितना हमसे बनेगा, हम आचरण भी करना चाहते हैं। अत: हमें आप यहाँ से घर ले चलो। अब हमारा यहाँ जी नहीं लगता और यहाँ रहने की अब जरूरत भी नहीं है; क्योंकि केवल तीनों समय दवा की गोलियाँ ही तो चलती हैं, यहाँ का कोई ऐसा इलाज नहीं है, जो घर न हो सकता हो। आपको भी बार-बार आने-जाने की परेशानी होती है। घर पर आप लोगों से धर्म की दो बातें सीख लेंगे तो जन्म-जन्मान्तर में काम आयेंगी।

विज्ञान अज्जू और अन्नू के विचारों को सुनकर मन ही मन प्रसन्न हुआ; क्योंकि डॉक्टर धर्मचन्द की भी यही सलाह थी और विज्ञान स्वयं भी यही चाहता था। फिर भी विज्ञान ने उनके मन में हुए परिवर्तन की प्रतिक्रिया जानने के लिए कहा –''तुम्हें शेष रही-सही बुरी आदतों को भी जीवनभर के लिए छोड़ना होगा। तभी इस विषय पर विचार हो सकता है।''

दोनों ने उत्साह से कहा ''हम आपकी सब बातें मानेंगे और जैसा कहेंगे, वैसा ही करेंगे।''

उस दिन से उन्होंने जो यदा-कदा चोरी छिपे शराब, सिगरेट पीते थे, उसको भी सदा के लिए तिलांजलि दे दी।

परन्तु जब खेतों में खड़ी फसलें पानी की प्रतीक्षा करते-करते सूख चुकी हों तो बाद में मूसलाधार बरसात की भी क्या कीमत ? उससे उस फसल को क्या लाभ ? यही स्थिति अन्नू और अज्जू की हो चुकी थी। काश ! वे कुछ पहिले चेत जाते। पर चेत कैसे जाते, मौत का बुलावा जो आ गया था।

अज्जू के फेंफड़े सिगरेट के धुएँ से अत्यंत क्षीण हो चुके थे और अब कोई भी दवा काम नहीं कर रही थी। यही स्थिति अन्नू

के लीवर की थी। यद्यपि अब कोई भी दवा काम नहीं कर सकती थी, पर 'जब तक श्वासा तब तक आशा' के अनुसार उपचार तो चल ही रहा था।

यद्यपि अज्जू और अन्नू अपनी-अपनी करनी पर पछता रहे थे। पर 'फिर पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत' वाली कहावत उनके मानस पटल पर बार-बार आ-जा रही थी। उनकी अन्तरात्मा से ऐसी आवाज आ रही थी कि लोगों से चिल्ला-चिल्लाकर कहें कि -'हम जैसी भूल भविष्य में कोई न करे।'

(क्रमशः)

प्रशिक्षण शिविर का आमंत्रण दिया

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे पंचम वार्षिकोत्सव के अवसर पर खनियांधाना मुमुक्षु मण्डल के सदस्यों द्वारा दिनांक 21 मई से 7 जून तक खनियांधाना में होने वाले 51वें वीतराग-विज्ञान शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का आमंत्रण दिया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल व अन्य विद्वानों के अतिरिक्त श्री महेन्द्रकुमार राहुलकुमारजी गंगवाल जयपुर, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, श्री कांतिभाई मोटानी मुम्बई, श्री नितिनभाई शाह मुम्बई आदि श्रेष्ठीजन मंचासीन थे।

डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में सभी साधर्मियों से प्रशिक्षण शिविर में पधारने एवं सहयोग करने की भावना व्यक्त की। प्रशिक्षण शिविर की संपूर्ण जानकारी श्री सुनील जैन 'सरल' द्वारा दी गई।

ताम्रपत्र पर ग्रंथों का विमोचन

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे पंचम वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनांक 26 फरवरी को षट्खण्डागम पुस्तक 1,2,3 तथा समयसार कलश का विमोचन डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के करकमलों द्वारा किया गया।

ज्ञातव्य है कि अब तक पाँचों परमागम, तत्त्वार्थसूत्र, इष्टोपदेश, मोक्षमार्गप्रकाशक की पाण्डुलिपि (पण्डित टोडरमलजी द्वारा हस्तलिखित) ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण हो चुके हैं तथा षट्खण्डागम पुस्तक 4,5,6 का कार्य चल रहा है।

संपर्क सूत्र - पं.मनोजकुमार जैन (चीनी वाले) मुजफ्फरनगर (मोबाइल - 7599301008) **E-mail : ptmanojjain@gmail.com**

नि:शुल्क प्राप्त करें

पण्डित राजमलजी पवैया द्वारा रचित त्रिलोकवर्ती सिद्धचक्र मंडल विधान नि:शुल्क प्राप्त करने हेतु **संपर्क करें -**

पी.सी. जैन, 95, पहली मंजिल, देना बैंक के ऊपर, भोगल रोड़, भोगल, नई दिल्ली-110014 मोबाइल - 9971752899

विद्वान, पुजारी एवं कार्यालयकर्मी उपलब्ध

श्री दिगम्बर जैन तीर्थ प्रबंधन प्रशिक्षण संस्थान सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि द्वारा छात्रों को एकाउन्ट, कम्प्यूटर, प्रबंधन, पूजन, विधि-विधान, जैनदर्शन, ज्योतिष इत्यादि विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती है।

यदि आप अपनी संस्था, मंदिरजी या औद्योगिक प्रतिष्ठान के लिये योग्य कार्यकर्त्ता चाहते हैं तो यहाँ आकर अपनी आवश्यकता के अनुरूप छात्रों का चयन कर सकते हैं। यदि आप द्रोणगिरि आने में असमर्थ हैं तो अपनी आवश्यकता का पत्र मार्च 2017 तक संस्थान कार्यालय पर भेजें।

संपर्क सूत्र - श्री भागचन्द जैन (पीली दुकान) 09617449494 श्री दिगम्बर जैन तीर्थ प्रबंधन प्रशिक्षण संस्थान सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि (लघु सम्मेदशिखर) सेंधपा, जिला-छतरपुर (म.प्र.) 471311

E-mail : drongirisansthan@gmail.com
whatsApp- 9617449494, 9009672513

मोबाइल - (प्राचार्य-रमेशचंदजी) 9926569762, शिक्षक-पण्डित देवेशकुमार 'बलेह' 909672513

जैनपथप्रदर्शक के स्वामित्व का विवरण
फार्म नं. 4 नियम नं. 8

समाचार पत्र का नाम	:	जैन पथप्रदर्शक (हिन्दी)
प्रकाशन स्थान	:	श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)
प्रकाशन अवधि	:	पाक्षिक
मुद्रक	:	श्री प्रमोदकुमार जैन (भारतीय) जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम.आई.रोड, जयपुर (राज.)
प्रकाशक का नाम	:	ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)
सम्पादक का नाम	:	श्री रतनचन्द भारिल्ल (भारतीय) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)
स्वामित्व	:	पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक :

दिनांक : 2-3-2017 **ब्र. यशपाल जैन**

ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें- वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

स्वर्ण जयंती के मायने (20)

मात्र इस जीवन के नहीं, हम अनंतकाल के लिये अनंतसुखी होने का उपाय करते हैं

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

आत्मकल्याण के लिये एवं सुखी होने के लिये एक दूरदृष्टिपूर्ण विशाल दृष्टिकोण की आवश्यकता है। यूं भी हम अपने इस लौकिक जीवन में भी दूरदर्शिता से ही काम लेते हैं और अपने सम्पूर्ण समय और शक्ति का अपव्यय मात्र अपने आज की छोटी-छोटी आवश्यकताओं की पूर्ति में ही नहीं कर देते हैं वरन् अपने सम्पूर्ण जीवन को ध्यान में रखते हुए अत्यल्प समय में अपनी आज की, वर्तमान, अपरिहार्य आवश्यकताओं की पूर्ति करके अपना शेष सम्पूर्ण समय का उपयोग अपने सम्पूर्ण जीवन के उत्थान के लिये करते हैं।

उक्त क्रम में हम अपने आज के छोटे-छोटे मनोरंजन, खेलकूद आदि को तिलांजलि देकर अपने समय का उपयोग शिक्षा, स्वास्थ्य और व्यवसाय के लिये करते हैं। हालांकि हमें खेलना अच्छा लगता है; पर हम खेल छोड़कर स्कूल-कॉलेज जाते हैं, हमें घूमना-फिरना और सोना अच्छा लगता है; पर हम वह सब छोड़कर पढाई करते हैं, हमें खाना अच्छा लगता है; पर हम अपने स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर कम खाते हैं। व्यायाम और थकाने वाले काम हमें अच्छे नहीं लगते हैं; पर स्वस्थ रहने के लिये हम यह सब करते हैं।

तात्पर्य यह है कि हम दूरदर्शिता से ही काम करना पसंद करते हैं। **विडंबना यह है कि हमारी यह दूरदर्शिता मात्र अपने इस वर्तमान जीवन तक ही सीमित है, इस वर्तमान जीवन के आगे या तो इसका विस्तार ही नहीं है या फिर इसकी दिशा अपनी आगामी पीढियों की ओर मुड़ जाती है, जिनका वास्तव में तो हमसे कोई सम्बन्ध ही नहीं है।**

वर्तमान जीवन के बाद तो हमारी और उनकी (आगामी पीढियों की) पहिचान ही खो जाती है, हम उनके लिये अत्यंत भिन्न और पराये हो जाते हैं। कभी-कभी तो यह शुभकार्य इसी जीवन में सम्पन्न हो जाता है। इसप्रकार दूरदर्शिता के नाम पर आगामी पीढियों के बारे में योजनायें बनाना और उन्हें क्रियान्वित करना स्वयं अपने कल्याण में तो उपयोगी हैं ही नहीं, कदाचित् उनके लिये भी किसी काम की नहीं; क्योंकि हम उनके लिये जो करते हैं, वह उन्हें पसंद ही नहीं होता है।

मेरे उक्त विवेचन का तात्पर्य मात्र यह स्थापित करना है कि हमें अपनी दूरदर्शिता की सीमाओं को मात्र इसी जीवन तक सीमित नहीं रखकर उसे इस जीवन की सीमा से पार आगामी अनंतकाल तक के लिये विस्तृत करना होगा।

जब हम अपने अनंतकाल के बारे में विचार करने लगेंगे तो हम ठीक उसीप्रकार अपने वर्तमान जीवन की अपरिहार्य आवश्यकताओं की पूर्ति के पीछे कम से कम शक्ति-श्रम और समय का उपयोग करते हुए अपनी सम्पूर्ण शक्ति और समय का उपयोग अनंतकाल तक के लिये आत्मा के अविनाशी कल्याण हेतु करेंगे, जिसप्रकार अभी इस वर्तमान सम्पूर्ण जीवन के लिये करते हैं और तो और हम अपनी आगामी पीढियों को भी इस मार्ग पर आने के लिये प्रेरित करेंगे, प्रयत्नशील होंगे।

ऐसा करने के लिये हमें क्या करना होगा ?

आज जिसप्रकार हम अपने आवासस्थल का चुनाव इस आधार करते हैं कि नितप्रति की आवश्यकताओं के लिये बाजार निकट हो, बच्चों की शिक्षा के लिये अच्छा स्कूल निकट हो, डॉक्टर या अस्पताल करीब हो। पास में अच्छा बाग-बगीचा हो और आस-पड़ौस भी संभ्रांत-सज्जन लोगों का हो। उसीप्रकार आत्मकल्याण के प्रयोजन को ध्यान में रखते हुए हमारी प्राथमिकता में यह सब भी जुड़ जायेगा कि नित देवदर्शन के लिये जिनालय करीब हो, बच्चों में धार्मिक संस्कार और शिक्षण के लिये पाठशाला निकट हो, अपने स्वाध्याय के लिये निकट ही प्रतिदिन प्रवचन होते हों, आस-पड़ौस में साधर्मियों का वास हो इत्यादि।

हमारे समक्ष चुनौती यह है कि इस जीवन की लौकिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन तो हमें हर जगह सहज ही मिल जायेंगे; पर आत्मार्थिता के ये साधन - जिनमंदिर, पाठशाला आदि सहज नहीं मिलेंगे, इनकी व्यवस्था हमें स्वयं करनी होगी। अन्य साहित्य तो हमें सहज ही उपलब्ध हो जायेगा; पर स्वाध्याय हेतु सत्साहित्य हमें प्रयत्नपूर्वक जुटाना होगा। मनोरंजन हेतु सिनेमा तो जगह-जगह मिल जायेंगे और हम पैसे खर्च करके वहाँ जायेंगे भी पर पाठशालाएं और शिक्षण शिविरों का आयोजन अपने निकट हो यह श्रमसाध्य है।

यदि आप हमसे सहमत हैं और अपने आत्मोत्थान के लिये उक्त साधनों की उपयोगिता समझते हैं तो आपके लिये यह सब साधन जुटाने का कार्य हमने अपने हाथ में लिया है।

– हमारे पास आधुनिक भाषा एवं शैली में रचित ऐसा पाठ्यक्रम है जो बालकों को जैनदर्शन का प्राथमिक ज्ञान प्रदान करने में सहायक है।

– हमारे पास ऐसे प्रशिक्षित अध्यापक हैं जो वैज्ञानिक शैली से बालकों को कम से कम समय में उपयुक्त शिक्षण प्रदान कर सकते हैं।

– हमारे पास जनसामान्य को धर्माध्यापक के रूप में प्रशिक्षित करने का पाठ्यक्रम व कार्यक्रम है, जिससे आप स्वयं प्रशिक्षित होकर अपने घर पर या निकटस्थ जिनमंदिर में बालकों को धार्मिक शिक्षा प्रदान कर सकते हैं।

– हमारे पास ऐसा महाविद्यालय है जो आपके बालकों को शिक्षित कर जैनदर्शन का मर्मज्ञ, अधिकारी विद्वान बना देता है और वे आपके निकटस्थ जिनमंदिर में नियमित प्रवचन की गतिविधियों का संचालन कर सकते हैं।

– आप अपने घर बैठे पत्राचार के माध्यम से और इन्टरनेट के माध्यम से उच्च धार्मिक शिक्षण प्राप्त कर सकते हैं।

– हमारे पास मूल आचार्यों द्वारा रचित विपुल सत्साहित्य है, जिनके

(शेष पृष्ठ 8 पर ...)

आत्मार्थी छात्रों के लिए अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें – इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भागों से आये छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 713 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 86 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं। अनेक छात्र पी.एच.डी./नेट/ जे.आर.एफ. आदि भी कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को जगद्गुरुरामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो पूरे देश में बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस., कैट, मैट, जे.आर.एफ. जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को दो वर्ष का राजस्थान शिक्षा बोर्ड का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद यदि छात्र चाहें तो दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी कर सकते हैं, जो (एम.ए.) के समकक्ष है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवीं) परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

नया सत्र 30 जून 2017 से प्रारंभ होगा। स्थान अत्यंत सीमित है; अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं।

दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें **खनियांधाना में 21 मई से 7 जून, 2017 तक** होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक रहना अनिवार्य होगा।

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल (प्राचार्य),

क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सन् 1977 से 39 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है।
2. यहाँ पूर्णत: धार्मिक परिवेश मिलता है, जिससे बालक संस्कारशील धर्मनिष्ठ बन जाते हैं।
3. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', पण्डित पीयूषजी शास्त्री आदि अनेक विद्वानों के सान्निध्य में सतत् प्रशिक्षण से जैनतत्त्वज्ञान/दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।
4. जैनदर्शन के विद्वान होने से स्व के कल्याण के साथ-साथ अपने परिवार-समाज के कल्याण में निमित्त होते हैं।
5. छात्रावास में रहने से अपने हिताहित का स्वयं निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगट होती है।
6. यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहकर पूरी भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है।
7. महाविद्यालय के छात्र औसतन प्रतिवर्ष राजस्थान बोर्ड तथा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में मैरिट में स्थान प्राप्त करते हैं।
8. संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध होते हैं।
9. छात्रों की वक्तृत्वशैली, तर्कशैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास होता है, जिससे छात्र सभी क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इसप्रकार श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश पाकर आपके बालक का सर्वांगीण विकास होता है। वह अपने और अपने परिवार, समाज की उन्नति में निमित्त होता है। जैनदर्शन का विद्वान बनकर स्व-पर कल्याण के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है।

क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो ? यदि हाँ.. तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को **दिनांक 21 मई से 7 जून 2017 तक खनियांधाना (म.प्र.)** में आयोजित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भेजें।

– पण्डित शान्तिकुमार पाटील

फॉर्म मंगाने का पता : – पण्डित शान्तिकुमार पाटील (उपप्राचार्य) (09413975133) श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) फोन : (0141) 2705581, 2707458, Email-ptstjaipur@yahoo.com

खनियांधाना का पता एवं संपर्क सूत्र –

श्री नन्दीश्वर दिगम्बर जैन मन्दिर, चेतनबाग, खनियांधाना, जिला-शिवपुरी (म.प्र.) 473990 मोबाइल- 09575305898 (सोमिल शास्त्री), 09644122018 (आकाश शास्त्री)

दृष्टि का विषय

32 नौवाँ प्रवचन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

समयसार परमागम की छठवीं–सातवीं गाथा के आधार पर इस विषय पर चर्चा चल रही है कि दृष्टि के विषय में पर्याय शामिल है या नहीं ? तथा उस पर्याय का वास्तविक अर्थ क्या है ?

इस संदर्भ में समयसार अनुशीलन का निम्न कथन द्रष्टव्य है–

''पर्यायदृष्टि का विषय बनने के कारण; **विशेष, अनेक, भेद एवं अनित्यता को पर्याय कहा जाता है** और द्रव्यदृष्टि का विषय बनने के कारण; **सामान्य, एक, अभेद एवं नित्यता को द्रव्य कहा जाता है।**

यही द्रव्य, द्रव्यदृष्टि का विषय बनता है और इसी के आश्रय से सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र की प्राप्ति होती है।

इस द्रव्य में सामान्य के रूप में **१. द्रव्य, २. एक के रूप में अनन्तगुणों का अखण्ड पिण्ड, ३. अभेद के रूप में असंख्य प्रदेशों का अखण्ड पिण्ड और ४. नित्य के रूप में अनंतानंत पर्यायों का सामान्यांश या वृत्ति का अनुस्यूति से रचित प्रवाह शामिल होता है।**

इसप्रकार दृष्टि के विषय में १. द्रव्य, २. क्षेत्र, ३. काल, ४. भाव की अखण्डता–एकता विद्यमान रहती है।[१]''

पर्याय और द्रव्य के सम्बन्ध में आजकल जितना भी भ्रम उत्पन्न हुआ है; वह सब द्रव्यार्थिकनय और पर्यायार्थिकनय का सही स्वरूप नहीं समझने के कारण हुआ है।

हमने द्रव्य–गुण–पर्याय के रूप में तो वस्तुव्यवस्था को समझा है; लेकिन स्वद्रव्य–स्वक्षेत्र–स्वकाल और स्वभाव के रूप में वस्तुव्यवस्था का अध्ययन बारीकी से नहीं किया।

'द्रव्य' शब्द के भी अनेक अर्थ होते हैं और 'पर्याय' शब्द के भी अनेक अर्थ होते हैं।

जब मैं नयचक्र लिख रहा था, तब मैं व्यवहारनय के सम्बन्ध में बहुत उलझन में रहा।

जब मैंने जैनेन्द्रसिद्धान्तकोश में व्यवहार का लक्षण देखा तो मैंने पाया कि जिनेन्द्र वर्णीजी ने नैगम–संग्रह–व्यवहारनयवाले व्यवहार नय के लक्षण भी वहीं लिख दिए जहाँ निश्चय–व्यवहारनयवाले व्यवहारनय के लक्षण भी वहीं लिखें।

१. समयसार अनुशीलन भाग–१, पृष्ठ – ७८

जैनेन्द्रसिद्धान्तकोश में दोनों व्यवहारनयों के लक्षण व उदाहरण, सभी मिले हुए थे। निश्चय–व्यवहारनय वाले प्रकरण में निश्चय–व्यवहार वाले व्यवहारनय की परिभाषाएँ देनी चाहिए थीं और नैगम–संग्रह–व्यवहारनय वाले प्रकरण में नैगम–संग्रह–व्यवहारवाले व्यवहार नय की परिभाषा देनी चाहिए थी; लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। इस बात पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया। मुझे भी यह विषय समझ में तब आया, जब मैंने इसका गहरा अध्ययन किया।

मैं इस संदर्भ में एक विषय और बताना चाहता हूँ कि श्री जिनेन्द्रवर्णी ने द्रव्यार्थिकनय के दश भेदों में पाँच को शुद्धद्रव्यार्थिक एवं पाँच को अशुद्धद्रव्यार्थिक बताया है। उनमें तीन शुद्ध द्रव्यार्थिक और तीन अशुद्ध द्रव्यार्थिक हैं, जो निम्नप्रकार हैं –

१. कर्मोपाधिनिरपेक्ष शुद्धद्रव्यार्थिकनय
२. भेदकल्पनानिरपेक्ष शुद्धद्रव्यार्थिकनय
३. उत्पादव्ययनिरपेक्ष शुद्धद्रव्यार्थिकनय
४. कर्मोपाधिसापेक्ष अशुद्धद्रव्यार्थिकनय
५. भेदकल्पनासापेक्ष अशुद्धद्रव्यार्थिकनय
६. उत्पादव्ययसापेक्ष अशुद्धद्रव्यार्थिकनय

उन्होंने शेष अन्वयद्रव्यार्थिकनय एवं परद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिकनय को अशुद्ध तथा स्वद्रव्यादिक ग्राहक एवं परमभावग्राही द्रव्यार्थिकनय को शुद्धद्रव्यार्थिकनय बताया है।

उक्त कथन का पोषक उनका कथन इसप्रकार है –

''द्रव्यार्थिकनय के पहले दो मूल भेद किए गए – शुद्धद्रव्यार्थिक व अशुद्धद्रव्यार्थिक तथा इसके प्रतिबिम्बरूप आगे दश भेद किए गए – १. उत्पादव्ययनिरपेक्ष शुद्धद्रव्यार्थिकनय, २. उत्पादव्ययसापेक्ष अशुद्धद्रव्यार्थिकनय, ३. भेदकल्पनानिरपेक्ष शुद्धद्रव्यार्थिकनय, ४. भेद–कल्पनासापेक्ष अशुद्धद्रव्यार्थिकनय, ५. कर्मनिरपेक्ष शुद्धद्रव्यार्थिकनय, ६. कर्मसापेक्ष अशुद्धद्रव्यार्थिक –नय, ७. स्वद्रव्यादिचतुष्टयग्राही शुद्धद्रव्यार्थिकनय, ८. परद्रव्यादिचतुष्टयविच्छेदक अशुद्धद्रव्यार्थिकनय, ९. परम–पारिणामिकभावग्राही शुद्धद्रव्यार्थिकनय और १०. गुण व त्रिकाली पर्यायों में अनुगत पिण्ड अन्वय नाम वाला अशुद्ध–द्रव्यार्थिकनय।[१]''

जबकि स्वद्रव्यादिग्राहक, परद्रव्यादिग्राहक, अन्वय एवं परम–भावग्राही द्रव्यार्थिकनयों में कर्मोपाधि, उत्पाद–व्यय एवं भेदकल्पना की सापेक्षता या निरपेक्षता न होने से शुद्धता एवं

१. नयदर्पण, पृष्ठ ४७६

अशुद्धता का भेद ही नहीं है।

अन्तिम जो परमभावग्राही द्रव्यार्थिकनय है; वह शुद्ध, अशुद्ध और उपचार से रहित परमस्वभाव को ग्रहण करता है, इसलिए उसे परमभावग्राही द्रव्यार्थिकनय कहा जाता है। यह परमभावग्राही द्रव्यार्थिकनय शुद्धता और अशुद्धता - दोनों से रहित है। इसे शुद्ध इसलिए नहीं कह सकते हैं; क्योंकि शुद्ध का अर्थ रागादि से रहित अर्थात् वीतरागी मानना होगा और वीतरागता का अर्थ निर्मल पर्याय है, जबकि यह परमभावग्राही द्रव्यार्थिकनय निर्मलपर्याय और मलिनपर्याय से सहित जो शुद्धाशुद्ध उपचार है, उससे रहित है।

यद्यपि जिनेन्द्रवर्णी ने शुद्धाशुद्ध के संबंध में अपने मन्तव्य को स्पष्ट करने का बहुत प्रयत्न किया, तथापि ऐसा लगता है कि वे स्वयं भी इस बात से पूरी तरह सन्तुष्ट नहीं हो पाये थे; क्योंकि चार्ट एक[१] में वे स्वयं चार नयों को शुद्ध एवं छह नयों को अशुद्ध बताते हैं, पर चार्ट दो[२] में पाँच शुद्ध और पाँच अशुद्ध नय बताते हैं।

जब ऐसा वर्णन हमें मिलता हो तो इसे गले उतारना कैसे संभव है? जिनकी वर्णीजी पर अगाढ़ श्रद्धा हो, वे इसे गले उतार भी लें; लेकिन यदि मैं भी यही अपनी किताब मैं लिख दूँ तब फिर मैं तो इस लेखन का जिम्मेदार हो जाऊँगा, कोई भी व्यक्ति मेरे पास आकर इस संबंध में मुझसे पूछ सकता है। मैं उससे यह थोड़े ही कह सकता हूँ कि 'मैंने तो यह उसमें से लिखा है, मैं इसके लिए जिम्मेदार नहीं हूँ।'

इसीप्रकार इस ओर किसी का ध्यान ही नहीं जाता कि स्वद्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव के दो-दो हिस्सों में एक हिस्से का नाम पर्याय है और दूसरे हिस्से का नाम द्रव्य है।

अरे भाई ! काल को भी पर्याय कहा जाता है, लेकिन यदि वस्तु में से पर्याय के नाम पर काल को निकाल देंगे तो फिर वस्तु ही नहीं बन सकती है।

अरे भाई! लौकिक व्यवहार में भी यदि किसी को पधारने का निमंत्रण देना हो तो कहाँ, कब, क्यों - इन प्रश्नों का उत्तर उसमें होना चाहिए, मात्र 'पधारना' कहना काफी नहीं है। उसमें ये सभी आवश्यक बातें होनी चाहिए।

यदि शादी का कार्ड भी देना हो, यदि उसमें वर-वधू का अलंकार व गुणों सहित नामोल्लेख हो, कृपाभिलाषी व दर्शनाभिलाषी - इनके नाम भी लिखे हों; लेकिन यदि उस कार्ड में समय और स्थान नहीं लिखा हो तो कोई भी शादी में नहीं जा पाएगा।

एक बार जब दादर (मुम्बई) में पंचकल्याणक हुआ था, उस पंचकल्याणक में श्री चिमनभाई मोदी ही सूचना देते थे, वे अपनी पुरानी परम्परा में ही गुरुदेव के प्रवचन की सूचना देने के लिए उनके नाम के पहले 'परम कृपालु....' आदि तीन चार पंक्ति के विशेषण लगाने के बाद कहते कि उनका (गुरुदेवश्री का) तीन बजे प्रवचन होगा, लेकिन इतना सुनने के पहले ही जनता उठ जाती थी। तब मैंने उनसे कहा कि गुरुदेवश्री के नाम के आगे इतने विशेषण लगाने की कोई आवश्यकता नहीं है। आपको तो 'पूज्यगुरुदेवश्री' का प्रवचन – इतना कहकर, समय और स्थान बताना ही पर्याप्त है।

मुझे याद है जब मेरा 'पण्डित टोडरमल : व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व' ग्रन्थ प्रकाशित हुआ था, तब लोगों को इस सम्बन्ध में बहुत शिकायत हुई कि मैंने टोडरमलजी के नाम के साथ 'जी' नहीं लगाया। अरे भाई! यदि मैं 'पण्डित टोडरमलजी : व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व' यह अपने शोध का विषय रखता तो मुझे विश्वविद्यालय द्वारा पीएच.डी. की ही उपाधि नहीं मिलती। वहाँ 'श्री' और 'जी' नहीं लगाया जाता है।

ऐसे ही पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के स्थान पर पूज्य पण्डित श्री टोडरमलजी स्मारक ट्रस्ट नहीं लिख सकते हैं। भगवान महावीर को महावीरजी नहीं कह सकते। यदि कहेंगे तो वह स्टेशन का नाम हो जायेगा।

इसीप्रकार स्वस्ति मंगलपाठ की पंक्तियों को भी लोग गलत कहते हैं, वे पंक्तियाँ निम्न हैं -

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।।

इन पंक्तियों के संबंध में वे कहते हैं कि इन पंक्तियों में भगवान के नाम के साथ 'जी' नहीं लगाया। वे लोग इन पंक्तियों को फिर स्वस्तिश्री वृषभनाथजी, स्वस्तिश्री अजितनाथजी ....इसप्रकार से बना लेते हैं। अरे भाई! संस्कृत का ऐसा नियम है कि संस्कृत में यदि एकवचन में विसर्ग लगा हुआ है तो उस विसर्ग का उच्चारण होना चाहिए। अब यदि उस स्वस्तिपाठ में 'जी' नहीं लगा है तो वह भगवान का कोई अपमान नहीं है। नाम तो जैसा चलता है, वैसा ही चलेगा।

इसप्रकार जब लौकिक व्यवहार में किसी कार्य का आयोजन द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव के बिना नहीं हो सकता है तो फिर वस्तु भी काल के बिना समग्रवस्तु नहीं कहला सकती है। यदि पर्याय के नाम पर काल को वस्तु में से निकाल दिया जाय तो वह सम्पूर्ण वस्तु नहीं कहलाएगी। **(क्रमशः)**

१. नयदर्पण, पृष्ठ २३० के साथ संलग्न चार्ट १
२. नयदर्पण, पृष्ठ ७२२ के साथ संलग्न चार्ट २

(पृष्ठ 4 का शेष...)

स्वाध्याय से हम सीधे ही आचार्यों द्वारा प्रणीत अध्यात्म का मर्म जान-समझ सकते हैं।

– हमारे पास आधुनिक भाषा-शैली में रचित जैनदर्शन के प्रत्येक मूल सिद्धांत की सटीक व्याख्या करने वाला सत्साहित्य विद्यमान है, जिसके माध्यम से हम जैनदर्शन के मर्मज्ञ बन सकते हैं।

– हमारे पास निरंतर सत्साहित्य के प्रकाशन व वितरण की व्यवस्था है, जिससे यह साहित्य घर बैठे ही जन-जन तक पहुंचता है।

– इंटरनेट पर उपलब्ध हमारा सत्साहित्य आप कभी भी विश्व के किसी भी कोने में बैठकर डाउनलोड कर सकते हैं।

– मासिक पत्र 'वीतराग-विज्ञान' के माध्यम से हम प्रतिमाह आपके द्वार पर दस्तक देते हैं।

– हमारा पाक्षिक पत्र 'जैनपथप्रदर्शक' आपको तत्त्वप्रचार की गतिविधियों से निरंतर परिचित करता रहता है।

– टी.वी. चैनल पर प्रवचनों के माध्यम से प्रति प्रात: माँ जिनवाणी की लोरियाँ आपके शयनकक्ष तक पहुंचती हैं।

– हमारे पास उपलब्ध हजारों घंटों के प्रवचनों की रिकॉर्डेड सीडी हर समय, हर जगह आपको जिनवाणी श्रवण की सुविधा प्रदान करती है।

इसप्रकार हम आपके उस अनन्त भविष्य की संभाल में संलग्न हैं, जिसकी ओर सामान्यत: सामान्यजन का ध्यान ही नहीं जाता है; पर जो हमारे लिये हितकारक और अपरिहार्य है।

हम निरंतर विगत 50 वर्षों से मात्र इसी कार्य में संलग्न हैं और आगे भी निरंतर यही सब करते रहने के लिये कृतसंकल्प हैं।

आइये ! हम सब मिलकर अपने अनन्त काल तक के लिये अनन्त सुखी होने हेतु इस कार्य को विशेष गति प्रदान करें। •

वैराग्य समाचार

(1) गुना (म.प्र.) निवासी श्री सुरेन्द्रकुमारजी बांझल मुम्बई का दिनांक 1 फरवरी को बसंत पंचमी के दिन 77 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप जयपुर शिविर एवं अन्यत्र लगने वाले शिविरों एवं पंचकल्याणकों में प्रतिवर्ष पधारकर तत्त्वज्ञान का लाभ लिया करते थे। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) कोलकाता निवासी श्री विनयकुमारजी पाण्ड्या का दिनांक 28 जनवरी को 58 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

आगामी कार्यक्रम...

सामूहिक बाल संस्कार शिविरों का आयोजन

श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, श्री कुन्दकुन्द स्वा. मंदिर ट्रस्ट भिण्ड एवं अ.भा.जैन युवा फै.भिण्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में 13वें सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविरों का आयोजन दिनांक 7 से 16 मई तक किया जा रहा है। इस वर्ष मध्यप्रदेश के भिण्ड, मुरैना, ग्वालियर, शिवपुरी, टीकमगढ, गुना, नरसिंहपुर में एवं उत्तरप्रदेश के इटावा, औरया, मैनपुरी, फिरोजाबाद, एटा, झांसी, ललितपुर जिलों के विभिन्न 101 स्थानों पर शिविर लगाने का लक्ष्य है। इसमें लगभग 175 विद्वानों की आवश्यकता है। अतएव जो महानुभाव बालबोध भाग 1,2,3 व वीतराग विज्ञान भाग 1,2,3 व छहढाला आदि पढा सकते हैं, हमें मोबाईल नम्बर 09826646644 (डॉ. सुरेश जैन) या 9826472529 (पुष्पेन्द्र जैन) व ई-मेल : kksmt.bhd@gmail.com पर सूचित करने की कृपा करें।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

3 मार्च	जयपुर	विदाई समारोह
6 से 12 मार्च	रामाशाह दि.जैन मंदिर मल्हारगंज, इन्दौर	समयसार विधान
2 से 9 अप्रैल	आत्मसाधना केन्द्र दिल्ली	शिविर,कन्या निकेतन का दीक्षान्त समारोह, विज्ञान वाटिका पुरस्कार वितरण एवं उपकार दिवस
24 से 28 अप्रैल	देवलाली-नासिक	आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी जयन्ती
21 मई से 7 जून	खनियांधाना (म.प्र.)	प्रशिक्षण शिविर

प्रकाशन तिथि : 28 फरवरी 2017

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com